

कमज़ोर होता रुपया भारतीय नरियातकों की चिंता का कारण क्यों है?

संदर्भ

एक कमज़ोर मुद्रा को नरियात के लिये अच्छा माना जाता है लेकिन भारत के संदर्भ में यह कथन बहुत हद तक स्पष्ट नहीं है। हालाँकि रुपया इस वर्ष एशिया की सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली प्रमुख मुद्रा है लेकिन एक ऐसा व्यापार युद्ध जो मांग आधारित व्यापार को खत्म कर सकता है, के चलते भारतीय नरियातक परेशान हैं। शायद ही कभी ऐसा समय आया हो जब मुद्रा के उतार-चढ़ाव ने नरियात पर असर डाला हो लेकिन इस बार यह उतार-चढ़ाव भारतीय नरियात को प्रभावित कर रहा है।

व्यापार युद्ध है भारतीय नरियातकों की चिंता का प्रमुख कारण

- दुनिया में चल रहे व्यापार युद्ध के कारण नरियात संभावनाओं की स्थिति कमज़ोर हुई है।
- चीन, ताइवान और दक्षिण कोरिया के विपरीत भारत विश्व स्तर पर बड़ी आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा नहीं है।
- अमेरिका और चीन के बीच व्यापार तनाव ने वियतनाम जैसे नरियात-नरिभर देशों को अपने स्थानीय बाज़ारों में बढ़ रहे चीनी उत्पादों के खिलाफ सुरक्षात्मक रहने के लिये प्रेरित किया है।

कमज़ोर होता रुपया भी है चिंता का कारण

- भारत सकल घरेलू उत्पाद में नरियात क्षेत्र का योगदान केवल 12 प्रतिशत है और इसके खराब प्रदर्शन के लिये रुपए की मज़बूती को ज़िम्मेदार माना जा रहा है।
- रुपए का यह स्तर वनरिमाण क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा क्योंकि आयात की घरेलू कीमतें बढ़ जाएंगी।

भारत को करना पड़ेगा प्रतिस्पर्द्धा का सामना

- चूंकितुरकी, ब्राज़ील, अर्जेंटीना, मेक्सिको, रूस और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों की मुद्राएँ तेज़ी से कमज़ोर पड़ रही हैं, इसलिये भारत को उन बाज़ारों में प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ सकता है।

तेल की बढ़ती कीमतें और वदेशी वस्तुओं के कारण चालू घाटे में वृद्धि

- तेल की बढ़ती कीमतों और साथ ही वदेशों में बने इलेक्ट्रॉनिक सामानों के प्रति भारतीयों के लगाव के साथ-साथ व्यापार की प्रतिकूल शर्तों से देश का चालू खाता घाटा बढ़ सकता है।

नषिकर्ष

- बढ़ती तेल की कीमतों के साथ डॉलर के मुकाबले रुपए की कमज़ोरी ने भारत के आयात बलि में वृद्धि की है।
- मूल्यह्रास के बावजूद, बढ़ते संरक्षणवाद, वैश्विक विकास की मंद गति और घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान के कारण नरियात वृद्धि कमज़ोर रही है।